

वॉल स्ट्रीट की डायनामाइट

वॉल स्ट्रीट सागा

मैं विस्फोटकों से कभी नहीं डरा। सिर्फ लोगों से।

डायनामाइट, कम से कम, ईमानदार होता है। तुम बत्ती जलाते हो। तुम्हें पता होता है कि कुछ गायब होने वाला है।

लोग अलग होते हैं। वे मुस्कुराते हैं। वे तुम्हारा हाथ मिलाते हैं। वे तालियां बजाते हैं। वे तुम्हें बधाई देते हैं।

और फिर बीस साल चुपचाप तुम्हारे पैरों के नीचे एक बारूदी सुरंग बिछाने में बिताते हैं।

अजीब बात यह है कि जब तुम जवान होते हो तो यह कोई नहीं सिखाता।

वे मेहनत सिखाते हैं। अनुशासन। धैर्य। त्याग। सम्मानित सभ्यता के पवित्र गुण।

पर कोई तुम्हें आगाह नहीं करता कि दुनिया तथ्यों से नहीं, व्याख्याओं से टिकी रहती है।

एक आदमी सफल हो जाता है। दस लोग उसे प्रतिभाशाली कहते हैं।

वही आदमी सब कुछ गंवा देता है। वही दस लोग पाते हैं कि वह शुरू से ही धोखेबाज़ था।

कुछ नहीं बदला, सिवाय हवा की दिशा के।

मैंने बहुत देर से सीखा कि प्रतिष्ठा किराये मिलती है। चरित्र का स्वामित्व होता है।

पहली नाशते से पहले गायब हो सकती है। दूसरी दिवालियापन झेलकर भी बच जाती है।

अधिकांश लोग अपना पूरा जीवन उस चीज़ की रक्षा में बिता देते हैं जो छीनी जा सकती है, और उसकी उपेक्षा में जो नहीं छीनी जा सकती।

अगर तुम भ्रम बेच रहे हो तो यह एक असाधारण व्यापार मॉडल है।

एक सुबह तुम जागते हो। आध्यात्मिक रूप से नहीं। दार्शनिक रूप से नहीं। भौतिक रूप से।

तुम दांत साफ़ करते हो। कॉफी बनाते हो। बाहर देखते हो। और अचानक पूरा संज्ञानात्मक ढांचा ढह जाता है।

इसलिए नहीं कि तुमने कोई नया सत्य खोज लिया। इसलिए कि तुमने पुराने झूठों पर विश्वास करना बंद कर दिया।

राजनेता बने रहते हैं। विशेषज्ञ बने रहते हैं। संस्थाएं बनी रहती हैं। भविष्यवक्ता बने रहते हैं।

अरबपति बने रहते हैं। टेलीविज़न बना रहता है। इंटरनेट बना रहता है। बाज़ार बना रहता है।

सब कुछ बना रहता है। सिवाय इस भ्रम में भाग लेने की तुम्हारी सहमति।

तभी समस्याएं शुरू होती हैं।

क्योंकि समाज सब कुछ माफ़ कर देता है। असफलता। कर्ज़। तलाक़। पागलपन। यहां तक कि अपराध भी।

पर एक चीज़ है जिसे वह आसानी से कभी माफ़ नहीं करता: वह व्यक्ति जिसे अब अनुमति की ज़रूरत नहीं रहती।

जिस पल तुम मान्यता मांगना बंद करते हो, पूरे उद्योग एक ग्राहक खो देते हैं।

जिस पल तुम स्वीकृति मांगना बंद करते हो, पूरे पदानुक्रम अपना उद्देश्य खो देते हैं।

जिस पल तुम पहचान मांगना बंद करते हो, पूरे कबीले एक भर्ती खो देते हैं।

उस बिंदु पर लोग घबरा जाते हैं। बहुत घबरा। क्योंकि स्वतंत्रता संक्रामक होती है। डर से कहीं ज्यादा संक्रामक।

डरा हुआ आदमी एक और डरा हुआ आदमी बनाता है। स्वतंत्र आदमी अनिश्चितता बनाता है।

कोई नहीं जानता कि एक स्वतंत्र आदमी आगे क्या करेगा। खुद वह स्वतंत्र आदमी भी नहीं। खासकर वही नहीं।

इसीलिए हर सभ्यता गुप्त रूप से पूर्वानुमेय लोगों को पसंद करती है।

पूर्वानुमेय उपभोक्ता। पूर्वानुमेय मतदाता। पूर्वानुमेय कार्यकारी। पूर्वानुमेय विद्रोही। पूर्वानुमेय क्रांतिकारी।

एक पूर्वानुमेय क्रांति अब तक का सबसे सुरक्षित निवेश है।

असली डायनामाइट कुछ और है। यह एक विचार है। एक अकेला विचार।

एक ऐसा जो मन में प्रवेश करता है और जाने से इन्कार करता है। एक ऐसा जो एक अस्वीकार्य सवाल पूछता है।

एक ऐसा जो हर पिछले उत्तर को संदिग्ध बना देता है।

और एक बार वह विचार आ जाए, तो कोई वापसी नहीं होती।

इमारत शायद खड़ी रहे। फर्नीचर शायद अछूता रहे। दस्तावेज़ शायद अब भी अपनी फ़ाइलों में करीने से रखे हों।

पर नींव जा चुकी होती है। विस्फोट पहले ही हो चुका होता है। चुपचाप। भीतर।

और सबसे भयावह हिस्सा? किसी ने इसे नहीं सुना, सिवाय तुम्हारे।

Ferdinando Frega

Ferdinando Frega — gillettenarrative.com